The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

# सिनेमा के सिद्धांत

**डॉ. विजय शिंदे**
देवगिरी महाविद्यालय,
औरंगाबाद - 431005
(महाराष्ट्र).

सिनेमा का निर्माण कोई एक व्यक्ति नहीं तो पूरे विश्वभर में विभिन्न देशों में विभिन्न भाषाओं के भीतर कई लोग कर रहे हैं। फिल्म निर्माण के दौरान निमार्ताओं द्वारा कोई सिद्धांत, मूल्य, विषय, नियम, कानून तय होते हैं। प्रत्येक निर्माता-निर्देशक इन सिद्धांतों और मूल्यों के लिए अपनी पूरी जिंदगी लगा देता है। इसके पहले स्पष्ट कर चुके हैं कि सिनेमा का समाज के साथ और साहित्य की विधाओं के साथ संबंध रहा है। सिनेमा एक कला भी है। कई विधाओं और कलाओं को सिनेमा अपने भीतर समेट लेता हैं। वह उन्हें न केवल समेटता है तो ताकतवर रूप में प्रस्तुत भी करता है। खैर इन सबका समेटना और प्रस्तुत करना नीति-नियम और कानून के तहत होता है। सिनेमा के निर्माता और निर्देशकों को लगता है कि हमसे बनी सिनेमाई कृति दर्शकों को पसंद आए, टिकट खरीदकर वे अगर उसे देख रहे हैं तो उनका पैसा भी वसूल हो जाए और सिनेमा के माध्यम से हमें जो संदेश दर्शकों तक पहुंचाना है वह भी उनके पास पहुंचे। सिनेमा का अंतिम उद्देश्य क्या होता है? इसे तय करने का काम सिनेमा के निर्माता, निर्देशक करते हैं। सिनेमा की कथा लेखक लिखता है, परंतु उसके माध्यम से प्राप्त संदेश और उद्देश्य को किस रूप में और कैसे दर्शकों को तक पहुंचना है यह निर्माता-निर्देशक तय करते हैं।

फिल्में कौनसे विषयों पर बनानी हैं, उन्हें किस रूप में प्रस्तुत करना हैं, कौनसे कलाकारों का चुनाव करना हैं, फिल्मों के शूटिंग के लिए लोकेशन कौनसे चुनने हैं... आदि बातों को तय करने का अधिकार फिल्म निर्माताओं का होता है। विश्व सिनेमा में ऐसे कई निर्माता और निर्देशक हैं जिन्होंने अपनी जिंदगी को एक ही संदेश और सिद्धांत को दर्शकों तक पहुंचाने में लगाई है। अपने सिनेमाई सिद्धांतों के साथ वे कभी समझौते नहीं करते हैं। यह बात केवल निर्माता और निर्देशकों के लिए ही लागू होती है ऐसी बात नहीं, कलाकारों के लिए भी लागू होती है। ऐसे कई कलाकार भी हैं जिन्होंने अपने सिद्धांतों के विरोध में जाकर कभी सिनेमा के भीतर काम नहीं किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि इंसानों के जिंदगी में जीने के सिद्धांत तय होते हैं और उसके तहत हम अपना जीवनानुक्रम जारी रखते हैं। फिल्में बनानेवाले निर्माता-निर्देशक भी इंसान ही है और

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

उनके जीवन में भी सिद्धांतों की एहमीयत होती है। अर्थात् उन्हीं सिद्धांत और मूल्यों को समाज में स्थापित करने और दर्शकों तक उन्हें पहुंचाने का उनका प्रयास होता है।

इस पाठ के पहले हम लोगों ने सिनेमा के कथा की संरचना को लेकर कई प्रकार और उपप्रकारों को लेकर विचार-विमर्श किया है साथ ही सिनेमा के जॅनर (शैली) पर भी प्रकाश डाला है। इनको पढ़ते वक्त एक बात हमें पता चलेगी कि विशिष्ट पद्धति से कथा की संरचना करते वक्त और किसी विशिष्ट जॅनर के तहत फिल्म बनाते वक्त उसके मूलभूत तत्त्व तय होते हैं। इन तत्त्वों को पालन करना पड़ता है तभी फिल्म की कथा और विषय के साथ न्याय कर सकते हैं। निर्माता-निर्देशक के खुद के सिद्धांत और मूल्य होते हैं या वह दुनिया के किसी दार्शनिक के विचारों से भी प्रभावित होता है। वह अपने सिद्धांतों और मूल्यों को सिनेमा के माध्यम से दर्शकों के सामने रखता है या वह जिन दार्शनिकों के विचारों से प्रभावित है उन विचारों को सिनेमा में अभिव्यक्त करने की कोशिश करता है। यह सबकुछ करते वक्त उसे सिद्धांत, व्यावसायिकता, मनोरंजनात्मकता, उचितता, सामाजिकता, व्यावहारिकता... आदि बातों का भी खयाल रखना पड़ता है। अर्थात् संक्षेप में कहा जाए तो फिल्म निर्माण कर्ता अपने विचार और सिद्धांत सिनेमा के माध्यम से प्रस्तुत करें परंतु मनोरंजन और व्यावसायिक नजरिए के साथ भी उसका तालमेल बिठाए या बॅलंस करें यह जरूरी होता है।

## 1. उपकरण सिद्धांत

सिनेमा निर्माण करते समय विविध उपकरणों की सहायता ली जाती है और उसके आधार पर सिनेमा में चमत्कार, अद्भुतता लाने की कोशिश होती है। अर्थात् असंभवनीय दृश्यों को उपकरणों की मदत से सफल बनाने का कार्य किया जाता है। आधुनिक सिनेमा में इसका बहुत अधिक प्रयोग हो रहा है। ऍनिमेशन फिल्में, साय-फाय फिल्में, युद्ध फिल्में, ऍडव्हेंचर फिल्में, मनोविश्लेषणात्मक फिल्में, हॉरर फिल्में आदि के साथ अन्य फिल्म प्रकारों में भी उपकरण सिद्धांत (Apparatus Theory) का कम-अधिक प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के फिल्म सिद्धांत में फिल्मों का यांत्रिक पक्ष अधिक प्रबल होता है और उससे दृश्यों तथा विषय को अतिरिक्त प्रभावी बनाने की कोशिश होती है। फिल्मों में सौंदर्य और आकर्षण निर्मिति के लिए कई उपकरणों की सहायता ली जाती है। इन सबका प्रतिनिधित्व कॅमरा और संपादन से जुड़े सारे साधन करते हैं। सिनेमा दर्शकों की आंखें और कान को सबसे अधिक प्रभावित करता है, अतः सिनेमा निर्माण के दौरान उसके दृश्य और श्रव्य पक्ष की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। दृश्य और श्रव्य रूप में सिनेमा की प्रस्तुति अधिक प्रभावी, आकर्षक और सौंदर्यपूर्ण हो इसलिए विविध उपकरणों की मदत लेने की कोशिश होती है। लोगों के वास्तविक जीवन में कई घटनाएं घट जाती है, कई विषय और प्रसंग अधिक व्यापकता

से गुजर जाते हैं और फिल्मों में उसे उसी रूप में दुबारा दिखाना होता है। अर्थात् उसकी पूनर्निर्मिति जैसी की वैसी करनी हो तो उपकरणों की मदत लेनी पड़ती है। उपकरण सिद्धांत को विकसित करने का श्रेय लुइस ब्यूड्राय को जाता है। लुइस ब्यूड्राय ने सर्वप्रथम मार्क्सवादी विचारों को प्रकट करने के लिए उपकरण सिद्धांत का उपयोग किया। सर्वहारा वर्ग की पीड़ाएं, संघर्ष, विद्रोह और मार्क्सवादी विचारों से बनती परिवर्तनवादी विचारधारा की सफलता से प्रस्तुत करने के लिए सबसे पहले इसे इस्तेमाल में लाया गया। इसके पहले भी उपकरणों की सहायता ली जा रही थी परंतु वह केवल आवश्यकताभर ही थी। लेकिन लुइस ब्यूड्राय ने बड़ी चतुरता के साथ इस तकनीक का इस्तेमाल किया तो बाद में वह सिनेमाई दुनिया में एक सिदधांत के तौर पर स्थापित हो गई।

## 2. लेखक सिद्धांत

फिल्मों के लिए मूलतः एक कहानी की जरूरत होती है और उसे किसी साहित्यकार तथा लेखक द्वारा लिखा जाता है। लेकिन यहां इस बात को ध्यान रखना जरूरी है कि साहित्यकार द्वारा लिखी कहानी और फिल्मी कहानी में जमीन-आसमान का अंतर होता है। कई फिल्मों में निर्माता-निर्देशक ही फिल्म का पटकथा लेखक होते हैं। फिल्म के प्लॉट के हिसाब से कई प्रसंग कागजों पर उतारे जाते हैं और उसके अनुकूल अन्य संवाद और घटनाओं को शब्दरूप में ढालकर चित्रित किया जाता है। सिनेमाई कथा को कोई साहित्यकार और गैर-साहित्यकार भी लिखता है। सिनेमा पढ़ने की विधा नहीं है, उसे देखा और सुना जाता है। अतः उसके हिसाब से मूल कथा में कई परिवर्तन होते हैं। सिनेमा की कथा लिखना एक कला है और इस कला के भी कई नियम और कानून होते हैं। यहीं नियम और कानून सिद्धांत का रूप धारण करते हैं। अर्थात् सिनेमा के अनुकूल उसके दृश्य और श्रव्य पक्ष को अधिक मजबूत कथा का निर्माण करना लेखक का कौशल होता है। इस कुशलता और तकनीकों को सिखकर फिल्मी कथा को अंजाम तक पहुंचाना लेखक सिद्धांत (Auteur Theory) कहलाया जाता है। एक ही फिल्मी कहानी पर अलग-अलग कालों में या एक ही समय विविध भाषाओं में अलग-अलग फिल्में बन सकती है। उसके प्लॉट निश्चित हो सकते हैं, उद्देश्य और अंत भी एक जैसा ही हो सकता है परंतु फिल्म निर्माताओं के हिसाब से इसकी प्रस्तुति में अंतर आ सकता है। शेक्सपिअर द्वारा लिखे 'रोमयो अँड ज्युलिएट' पर विश्व की कई भाषाओं में फिल्में बनी है। शेक्सपिअर ने इसे नाटक के तौर पर लिखा परंतु फिल्मों में कई घटना, प्रसंग और संवादों की कटौती के साथ विविध भाषाओं में लेखक सिद्धांत (Auteur Theory) के तहत जब उसने फिल्मी स्वरूप धारण किया तो उससे एक अलग चमत्कार की निर्मिति हो गई है। 'रोमियो अँड ज्युलिएट' को लेकर अंग्रेजी भाषा में 1954, 1966, 1996, 2013 में फिल्में बनी और खूब चली भी। यह फिल्में एक ही कथा को लेकर चलती है परंतु इसके निर्माता-

निर्देशक और फिल्म लेखक बदलकर आते हैं और कुछ अंतरों के साथ यह फिल्में अपने उद्देश्यों तक पहुंच जाती है। इसी विषय को लेकर केवल अंग्रेजी में ही नहीं विश्व की अन्य भाषाओं में यह फिल्में मूल विषय के साथ जुड़कर या उससे प्रभाव पाकर काफी सफल भी हो चुकी है। बॉलीवुड़ फिल्म इंडस्ट्री में बनी 'कयामत से कयामत तक' (1988) और 'गोलियों की रासलीला रामलीला' (2013) यह फिल्में मूल कथा में कई परिवर्तनों के साथ सिनेमा का रूप धारण कर चुकी है। अर्थात् सिनेमाई तकनीक, संस्कृति, परिवेश, काल और विविध प्रभावों के साथ फिल्में परदे पर उतारी जाती है उसे ही लेखक सिद्धांत (Auteur Theory) कहा जाता है।

## 3. नारीवादी फिल्म सिद्धांत

आधी दुनिया में स्त्रियों का अस्तित्व छाया हुआ है अगर हम ऐसा कह रहे हैं तो यह भी सत्य है कि आधी दुनिया पर स्त्रियों का अधिकार होना चाहिए, लेकिन वास्तव में ऐसा है? यह सवाल अपने-आप से पूछे तो उत्तर मिलता है की नहीं है। दुनिया पर जितना अधिकार पुरुषों का है उतना ही अधिकार स्त्रियों का भी है। दुनिया के निर्माण से आज तक स्त्रियों को उनके अधिकार और हकों से दूर रखा गया है। अर्थात् उसके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया है, उस पर अन्याय और अत्याचार किया है। स्त्री इसके विरोध में लड़ी है, उठ खड़ी हो चुकी है। यह लड़ाई सालों से जारी है और आगे भी जारी रहेगी। साहित्य के बहुत बड़े हिस्से को स्त्रियों की इस लड़ाई ने प्रभावित किया है वैसे ही फिल्मी दुनिया को भी इस लड़ाई ने काफी प्रभावित किया है। नारीवादी विचारों को पुष्टि प्रदान करने और उनके हकों-अधिकारों को एक मिशन मानकर फिल्मों में चित्रित प्रसारित करने के लिए स्त्री निर्माता और पुरुष निर्माता भी अग्रणी रहे हैं। स्त्रियों के साथ हो रहे प्रत्येक अन्याय के पहलू को फिल्मों में चित्रित कर उसके आक्रोश को चित्रित करना और स्त्रियों के पक्ष में माहौल बनाना तथा स्त्रियों में जागृति लाने का कार्य फिल्मों ने बखूबी किया है। प्रजनन संबंधी अधिकार, घरेलू हिंसा, मातृत्व अवकाश, समान वेतन संबंधी अधिकार, यौन उत्पीड़न, भेदभाव एवं यौन हिंसा आदि विषयों को फिल्मों में बारिकी से दिखाया जाता है और इन विषयों को चित्रित करनेवाली फिल्में नारीवादी फिल्म सिद्धांत (Feminist Film Theory) की मानी जाती है। विश्व सिनेमा के पटल पर उल्लेखनीय नारीवादी फिल्म सिद्धांतकारों और आलोचकों की सूची में कैरल जे क्लोवर, पाम कुक, एलिजाबेथ कोवाई, बारबरा क्रिड, मैरी एन डोइने, मरियम हैनसेन, मौली हास्केल, दाई जिंहुआ, क्लेयर जॉनसन, ई एनी कापलान, जेड्रुड कोच, एनेट कुहन, मेरिएन जॉनस्न, टेरेसा डी लॉरिएट्स, जोआन मेलैन, तानिया मोडलेस्की, लौरा मुलवैई, पैट्रिस पेट्रो, ग्रिसेल्डा पोलक, बी

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

रूबी रिच, मार्जोरी रोजेन, एला शॉहॅट, कजा सिल्वरमैन, जैकी स्टेसी, पेट्रीसिया व्हाइट, सुसान एम व्हाइट, लिंडा विलियम्स आदियों का समावेश होता है।

फिल्मों में नारी से जुड़े छोटे-बड़े पहलुओं पर बारिकी से प्रकाश डाला जाता है। उसके माध्यम से नारी मन के हर हिस्से का दर्शन दुनिया को करवाने की कोशिश होती है। पुरुष ही नहीं तो स्त्रियां भी अपने-आप से परिचित नहीं होती है। हमारे मन के कई आयाम अंधेरे से घिरे होते हैं उन्हें नारीवादी फिल्मों के माध्यम से खोलने का प्रयास किया जाता है। ऐसी फिल्मों में निम्नलिखित कड़ियों को भी एहमियत भी दी जाती हैं -

1. सांस्कृतिक नारीवाद
2. पर्यावरणीय नारीवाद
3. समतामूलक नारीवाद
4. समलैंगिक नारीवाद
5. उदारवादी नारीवाद
6. वैयक्तिक नारीवाद
7. मार्क्सवादी नारीवाद
8. समाजवादी नारीवाद
9. भौतिक नारीवाद
10. बहु-सांस्कृतिक नारीवाद
11. विखंड़नवादी नारीवाद
12. आध्यात्मिक नारीवाद आदि।

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

"विश्व के सार्थक सिनेमा का इतिहास हमें बताता है कि चाहे नारी रहस्य कथा हो या मुक्ति कथा - अनेक पुरुष फिल्मकारों ने पर्दे पर आधुनिक स्त्री की महत्त्वपूर्ण छवि प्रस्तुत की है। स्वीडन के फिल्मकार इंगमार बर्गमॅन हों या भारत के सत्यजित राय - इन फिल्मकारों ने अपनी नायिकाओं को कॅमरे की एक अद्भुत रोशनी में देखा है। श्याम बेनेगल 27 सालों से फिल्में बना रहे हैं। विज्ञापन फिल्मों की दुनिया से उभरे इस फिल्मकार ने या तो नायिका प्रधान सशक्त फिल्में बनाई हैं या संदेश प्रधान सपाट फिल्मों की दुनिया को हरा-भरा करने की कोशिश की है।" *(सिनेमा : कल, आज, कल, पृ. 432)*

## 4. औपचारिक, परंपरागत तथा नियमनिष्ठ फिल्म सिद्धांत

सिनेमा का औपचारिक, परंपरागत तथा नियमनिष्ठ सिद्धांत (Formalist Film Theory) फिल्मों के अंतर पक्ष और बाह्य पक्ष को विशिष्ट रचना में ढाल देता है। विश्व सिनेमा के परिदृश्य में क्लासिक सिनेमा और विविध इन्स्ट्युटों (संस्थाओं) के भीतर बननेवाला सिनेमा स्थापित नियम और कानून के तहत बनता है। ऐसी फिल्मों में मुड़, संगीत और मिश्रण यह त्रीसूत्री अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। काल्सिक सिनेमा बनाने की प्रक्रिया, उसके विषय, रचना विधान और फिल्मों का उद्देश्य एक विशिष्ट नियम के साथ आगे बढ़ता है और अपने मकाम को छुता भी है। ऐसी फिल्मों को बनाते वक्त इन नियमों और कानूनों का पालन भी करना पड़ता है। विश्व सिनेमा में बनती क्लासिक फिल्में देखने के बाद इसका एहसास हो सकता है। 1960 और 1970 के दशक में बनी ज्यादातर फिल्में इस सिद्धांत के तहत बनी है। भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में भी इसी समय यह फिल्में बनी। इस प्रकार की फिल्में बनानेवाले कई निर्माता-निर्देशकों ने आगे चलकर संस्थागत स्वरूप भी धारण किया। भारतीय सिनेमा जगत् में 'ऋत्विक घटक' इसी प्रकार का कार्य करता रहा है। इनकी फिल्मों के पॅटर्न, आदर्श, मूल्य तय होते हैं। सामाजिक सभ्यता और संस्कृति को स्थापित करने के लिए यथार्थ के साथ जुड़नेवाली इस प्रकार की फिल्में विश्व सिनेमा में गहरी छाप छोड़ देती है। "हॉलीवुड़ के क्लासिक सिनेमा ने इन फिल्मों के जरिए क्लासिक नॅरेटिव स्ट्रक्चर को गढ़ा। सैद्धांतिक रूप से इसकी जड़ें पुनर्जागरण के दौरान विकसित हुई कलाओं में देखी जा सकती हैं। इन फिल्मों की पटकथाओं ने भी अपनी एक शैली विकसित की, जो आज भी इतने बदलावों के बावजूद खरी उतरती है। नायक का साधारण दुनिया से विशिष्ट दुनिया में प्रविष्ट होना, एक लक्ष्य, उसे हासिल करने की जद्दोजहद, रास्ते में आनेवाली बाधाएं और सफलता हासिल करना, अरस्तू की समय, स्थान और एक्शन की एकरूपता को बनाए रखने की थ्योरी इसी शैली का हिस्सा बन चुकी हैं।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 56)*

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

## 5. मार्क्सवादी फिल्म सिद्धांत

मार्क्सवादी फिल्म सिद्धांत (Marxist Film Theory) फिल्म निर्माण के पुराने सिद्धांतों में से एक सिद्धांत है। कार्ल मार्क्स ने दुनिया के हर शख्स को प्रभावित किया था। उनके विचारों से विद्वान, साहित्यकार, कलाकार आदि भी प्रभावित हो चुके हैं। फिल्म निर्माता और फिल्मी अदाकारों को भी इनके सिद्धांतों ने आकर्षित किया है, अतः उनके परिवर्तनवादी विचार कहानी का रूप धारण कर साहित्य के माध्यम से फिल्मों में भी आ चुके हैं। 1920 के आसपास से रशिया के फिल्म निर्माताओं में सर्गेई ने सबसे पहले मार्क्स के विचारों को फिल्मों में ढाला और देखते ही देखते सारे विश्व में यह विचार फैलते गए। चंद लोगों के हाथों में समाई सत्ता को मार्क्सवादी विचारधारा ने आवाहन दिया था, चारों तरफ सत्ता का विरोध हो रहा था और वह विरोध बड़ी गति के साथ विश्वजनीन स्वरूप ले रहा था। कुछ लोगों को छोड़े तो दुनिया का बहुत बड़ा हिस्सा गुलामी में सड़ते जा रहा था, अतः मार्क्स के आगमन के साथ उसकी लड़ाई दुनिया की हो जाती है और सबके लिए अपने हक की भी लगती है। विभिन्न देशों में कम-अधिक मात्रा में अलग-अलग नामों के साथ मार्क्सवादी विचारधारा फैलती गई।

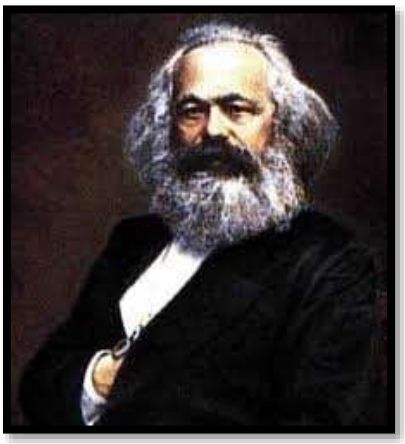

***कार्ल मार्क्स***

फिल्मी दुनिया ने इसकी सामाजिक परिवर्तन की ताकत और झूकाव को बड़ी बारीकी के साथ देखा, परखा और चित्रित किया। लोगों के दिल की बात जब परदे पर उतरी तो उसे दर्शकों ने काफी पसंद भी किया। "चिंतन के इतिहास में इसका उद्भव कार्ल मार्क्स (1818-1853) के विचारों से होता है। मार्क्सवाद जीवन का संपूर्ण दर्शन माना जाता है, पर केवल दर्शन मानने से मार्क्सवाद के संपूर्ण तथ्यों की अभिव्यक्ति नहीं होती। इसीलिए कुछ विद्वान मार्क्सवाद को

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

क्रियात्मक दर्शन के रूप में भी स्वीकार करते हैं। कार्ल मार्क्स ने फायरबाख पर अपनी थीसिसें लिखते समय इस तथ्य पर प्रकाश डाला था कि अबतक दार्शनिक सृष्टि की केवल व्याख्या करते रहे हैं, किंतु अब वह समय आ गया है कि हम उसका परिवर्तन करें। परिवर्तन मूलतः क्रियाशिलता का प्रतीक है। इसीलिए जिस दर्शन का लक्ष्य परिवर्तन है, वह मूलतः क्रियात्मक है। इस प्रकार मार्क्सवाद के दो स्वरूप हैं - पहला सृष्टि और समाज का विश्लेषणात्मक अध्ययन और दूसरा उसी संचित अध्ययन के आधार पर सामाजिक परिवर्तन का प्रयास।" *(हिंदी साहित्य कोश, पृ. 494-495)* मार्क्स के यह विचार आगे चलकर मार्क्सवाद की शक्ल लेते हैं और विविध देशों में अलग-अलग रूप में ढलकर समाज, साहित्य, सिनेमा जैसे क्षेत्रों में फैलने लगते हैं।

भारत के भीतर द्वंद्वात्मक भौतिकवाद और समाजवाद आदि विचार इसी के फलस्वरूप आ जाते हैं। विश्व सिनेमा में मार्क्स के इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर निर्माण होनेवाली सारी फिल्मों का बेसिक सिद्धांत मार्क्सवादी फिल्म सिद्धांत माना जाता है। मार्क्सवाद मानव सभ्यता और समाज को हमेशा से दो वर्गों - शोषक और शोषित - में विभाजित मानता है। माना जाता है साधन संपन्न वर्ग ने हमेशा से उत्पादन के संसाधनों पर अपना अधिकार रखने की कोशिश की तथा बुर्जुआ विचारधारा की आड़ में एक वर्ग को लगातार वंचित बनाकर रखा। शोषित वर्ग को इस षड़यंत्र का भान होते ही वर्ग संघर्ष की जमीन तैयार हो जाती है। वर्गहीन समाज (साम्यवाद) की स्थापना के लिए वर्ग संघर्ष एक अनिवार्य और निवारणात्मक प्रक्रिया है। फिल्मों में इसी संघर्ष को बड़ी खूबी के साथ दिखाने के प्रयास मार्क्सवादी फिल्म सिद्धांत का स्वरूप लेते हैं।

## 6. दार्शनिक फिल्म सिद्धांत

दर्शनशास्त्र (Philosophy) वह ज्ञान है जो परम सत्य और प्रकृति के सिद्धांतों और उनके कारणों की विवेचना करता है। दर्शन यथार्थ की परख के लिए एक नजरिया है। दार्शनिक चिंतन मूलतः जीवन की अर्थवत्ता की खोज का पर्याय है। वस्तुतः दर्शनशास्त्र स्वत्व, अर्थात् प्रकृति तथा समाज और मानव चिंतन तथा संज्ञान की प्रक्रिया के सामान्य नियमों का विज्ञान है। दर्शनशास्त्र सामाजिक चेतना के रूपों में से एक है। Philosophy के अर्थों में दर्शनशास्त्र शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम पाइथागोरस ने किया था। विशिष्ट अनुशासन और विज्ञान के रूप में दर्शन को प्लेटो ने विकसित किया था। उसकी उत्पत्ति दास-स्वामी समाज में एक ऐसे विज्ञान के रूप में हुई जिसने वस्तुगत जगत् तथा स्वयं अपने विषय में मनुष्य के ज्ञान के सकल योग को इकट्ठा किया था। यह मानव इतिहास के आरंभिक सोपानों में ज्ञान के विकास के निम्न स्तर के कारण सर्वथा स्वाभाविक था। सामाजिक उत्पादन के विकास और वैज्ञानिक ज्ञान के संचय की प्रक्रिया में भिन्न भिन्न विज्ञान दर्शनशास्त्र से पृथक होते गए और दर्शनशास्त्र एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विकसित होने लगा।

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

दुनिया के विषय में सामान्य दृष्टिकोण का विस्तार करने, यथार्थ के विषय में चिंतन की तर्कबुद्धिपरकता, तर्क तथा संज्ञान के सिद्धांत विकसित करने की आवश्यकता से दर्शनशास्त्र का एक विशिष्ट अनुशासन के रूप में जन्म हुआ। न केवल भारत में सारे विश्व में कई चिंतक और दार्शनिक होकर गए है जिनके सिद्धांत मनुष्य जीवन के लिए लाभकारी है। इनका पूनर्वलोकन, पूनर्स्थापना कई माध्यमों से होती रही हैं। फिल्में भी उसके लिए एक माध्यम बनकर आती है और फिल्मों के मनोरंजनात्मक आयाम के साथ दार्शनिक पक्ष भी उभकर सामने आता है।

दर्शन को प्राय: तत्त्वज्ञान (मेटाफिजिक्स) के अर्थ में ही लिया जाता था। दार्शनिकों का लक्ष्य समग्र की व्यवस्था का पता लगाना था। जब कभी प्रतीत हुआ कि इस अन्वेषण में मनुष्य की बुद्धि आगे जा नहीं सकती, तो कुछ गौण सिद्धांत विवेचन के विषय बने। यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू के बाद तथा जर्मनी में कांट और हेगल के बाद ऐसा हुआ। यथार्थवाद और संदेहवाद ऐसे ही सिद्धांत हैं। इस तरह दार्शनिक विवेचन में जिन विषयों पर विशेष रूप से विचार होता रहा है वे ये हैं -

**अ. मुख्य विषय**

1. ज्ञानमीमांसा (Epistemology)
2. तत्त्वमीमांसा (Metaphysics)
3. नीतिमीमांसा (Ethics)

**आ. गौण विषय**

1. यथार्थवाद
2. संदेहवाद

इन विषयों को विचारकों ने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार विविध पक्षों से देखा है। किसी ने एक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया है, किसी ने दूसरे पक्ष पर। प्रत्येक समस्या के नीचे उपसमस्याएं उपस्थित हो जाती हैं। साहित्य के भीतर यह विचारधारा सीधे उतरी और उसके बहाने फिल्मों में भी इसकी स्थापना हो गई। इसका मनोरंजनात्मक पक्ष बाकी फिल्मों जैसा ताकतवर नहीं होता परंतु समस्त मानव हितों की रक्षा के लिए यह अत्यंत कारगर होता है। व्यावसायिक आयामों में यह फिल्में भले ही थोड़ी-बहुत असफल लगती है परंतु विविध पुरस्कारों को पाने में तथा आलोचकों की वाहवाही तथा चर्चा में जरूर अपना स्थान बना लेती है। दार्शनिक सिद्धांत को अपना आधार बनानेवाली फिल्में लंबे समय तक दर्शकों पर अपना असर छोड़ती है और दूसरी बात यह कि उनकी

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

प्रासंगिकता भी बनी रहती है। जिस युग में यह फिल्में जिन विषयों को लेकर आती है उसके खत्म होने के बाद भी उपयोगी साबित होती है।

## 7. मनोविश्लेषणात्मक फिल्म सिद्धांत

मनोविश्लेषणवाद का प्रवर्तक फ्रायड को माना जाता है। फ्रायड ने मानव मस्तिष्क के तीन भाग चेतन, अवचेतन और उपचेतन माने हैं। उन्होंने काम और व्यक्ति की दमित भावनाओं को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। फ्रायड के शिष्य एडलर ने काम की जगह अहं को मुख्य माना जबकि उनके एक अन्य शिष्य युंग ने दोनों को एक साथ रखा। फ्राइड के मनोविश्लेषणवाद ने कला और साहित्य को भी बहुत अधिक प्रभावित किया है। फिल्मों का संबंध कला से आता है और फिल्मों का मूल कथा साहित्य होने के कारण दोनों तरफ से मनोविश्लेषणवाद का सिनेमा में प्रवेश होता है। साहित्य और कला के नाते विषय की पृष्ठभूमि से प्रेरणा लेकर फिल्मों में समाहित इस सिद्धांत को मनोविश्लेषणात्मक फिल्म सिद्धांत (Psychoanalytical Film Theory) कहा जाता है।

"मनोविश्लेषण अपने प्रमुख और प्रारंभिक रूप में मानसिक और स्नायविक रोगों की चिकित्सा की विशेष विधि है, जिसके आस-पास मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का संघटन हो गया है। इसके जन्मदाता सिग्मंड फ्राइड थे और उन्होंने इसका प्रयोग चिकित्साशास्त्र में किया। परंतु चिकित्सा की यह विधि जिन मूल सिद्धांतों पर आधारित है, उन सिद्धांतों के स्पष्टीकरण, समर्थन, विरोध, अन्य सिद्धांतों की स्थापना आदि से फ्राइड के समय से अबतक मनोविश्लेषण ने इतनी प्रगति की है कि आधुनिक युग की कोई भी विचारधारा इसके प्रभाव से अछूती नहीं रह सकी है। मानसिक स्नायविक रोगों की चिकित्सा करते समय फ्राइड ने देखा कि सम्मोहन क्रिया (Hypnotism) अथवा वार्तालाप में स्वछंद-विचार-साहचर्य से बहुत से पुराने अनुभव पुनरुज्जीवित हो उठते हैं। उन्होंने यह भी पाया कि इन अनुभवों का मूल कारण कामवृत्ति और उसका अचेतन रूप से दमन है। इस प्रकार वे जिस मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर पहुंचे, उसका सार तीन शब्दों में व्यक्त हो सकता है - शैशवीय दमित कामवृत्ति। उनके अनुसार जीवन में यह मुख्य प्रेरक शक्ति है, यह शिशु के जन्म से ही कार्यशील रहती है और इनका प्रकाशन मानव के समस्त व्यवहार में परोक्ष रूप से होता है। इस शक्ति को अधिक व्यापक अर्थ देने के लिए वे 'लिबिडो' शब्द का प्रयोग करते हैं। शैशव में जब मानस में केवल 'इड़' ही विकसित रहता है, दमन का प्रश्न नहीं उठता है, किंतु सामाजिक और नैतिक दबावों के कारण अहं और सुपर ईगो या 'आदर्श अहं' का विकास होने लगता है और स्वाभाविक कामेच्छा का दमन होते जाता है। इन दमित इच्छाओं से अचेतन मानस का निर्माण होता है। इच्छाओं के दमन का सिद्धांत दो विचारों पर आधारित है, एक तो यह कि जो निषिद्ध है, वह इच्छा का विषय होता है, दूसरे यह कि जिससे भय लगता है, वह भी इच्छा

का विषय है। प्रबल इच्छा का दमन ही चेतन मन में भय का रूप ले लेता है। इन विचारों के फलस्वरूप फ्राइड के सिद्धांत में यह माना गया है कि शिशु की कामवृत्ति अपने माता-पिता और भाई-बहनों की ओर प्रेरित होती है, परंतु नैतिक निषेधों के कारण इस वृत्ति का दमन होता रहता है और व्यक्ति के मन में कुंठाएं बन जाती है।" *(हिंदी साहित्य कोश, पृ. 475)* कुलमिलाकर फिल्मों में फ्राइड के इसी विचार और मानव मन के भीतरी हलचल को फिल्मों में दृश्य स्वरूप दिया जाता है। मानव के मन में चल रही विविध हलचलों को परदे पर दिखाना और उसके फलस्वरूप उसकी क्रियाएं और प्रतिकिरयाएं उतारा जाना फिल्म निर्माताओं को भी प्रिय लगता है। ऐसी फिल्में फ्राइड के मनोविश्लेषणवाद इस सिद्धांत पर ही आधारित होती है।

## 8. संचनावादी फिल्म सिद्धांत

फिल्मों के निर्माण में उसकी संरचना की भी एहमीयत होती है। कथा संरचना से लेकर उसकी प्रस्तुति तक विभिन्न जगहों पर उसकी संरचना के आदर्श होते हैं। इन्हीं आदर्श और मानदंड़ों के तहत फिल्म को बनाना और उस स्वरूप में ढालना ही संरचनावादी फिल्म सिद्धांत (Structuralist Film Theory) को अपनाना है। इसके पहले फिल्मों की कथा संरचना इस पाठ में हमने इस पर विस्तृत विवेचन भी किया है। फिल्मों में केवल कथा ही नहीं तो प्रत्येक हिस्से की एक संरचना होती है। कथा की भाषा या उपयोगिता शब्द से लेकर परदे तक के सारे साधन विशिष्ट संरचना का परिचय देते हैं। उसे तोड़कर कोई नई संरचना में ढालना या उसके आधार के बिना फिल्मों को बनाने का प्रयास करना सिनेमा की लोकप्रियता या प्रभाव को हानि पहुंचाना होता है। फिल्मों में भाषा का आधार लेकर प्रतीक, बिंब और संकेतों के माध्यम से कुछ अलग और व्यापक प्रस्तुति करने की कोशिश की जाती है और इसकी सफलता के लिए विभिन्न तकनीकों का सहारा भी लिया जाता है। विश्व सिनेमा अपने समय और परिवेश का वास्तविक चित्रण करना चाहता है परंतु उस पर विविध जगहों पर ताकतवर दबाव भी काम करते हैं। इनसे बचने के लिए मध्य मार्ग के तहत भाषाई चातुर्य और सिनेमाई चतुरता के तहत फिल्मों पर संरचनावादी संस्कार किए जाते हैं।

संरचनावाद शब्द को अक्सर एक विशिष्ट प्रकार के मानववादी संरचनावादी विश्लेषण के संदर्भ में इस्तेमाल किया जाता है जहां तथ्यों को संकेतों के विज्ञान यानी संकेतों की एक प्रणाली से उल्लेखित किया जाता है। महाद्वीपीय दर्शन में इस शब्द का आम तौर पर इसी तरह प्रयोग किया जाता है। हालांकि इस शब्द का प्रयोग संरचनात्मक दृष्टिकोण के विविध संदर्भ जैसे कि सामाजिक नेटवर्क विश्लेषण और वर्ग विश्लेषण में भी किया जाता है। इस अर्थ में संरचनावाद संरचनात्मक विश्लेषण या संरचनात्मक समाजशास्त्र का पर्याय बन गया है। सरंचनावाद एक ऐसी पहल है जिसमें सामाजिक संरचना, अवरोध और अवसरों को अधिक स्पष्ट तौर पर देखा जाए यह

सांस्कृतिक मानदंड़ों या अन्य व्यक्तिपरक चीजों की तुलना में मानव व्यवहार पर अधिक प्रभाव डालता है। फिल्मों के मूल उद्देश्य मनुष्य मन, विचार और आचार को अभिव्यक्त करने की सफलता संरचनावादी फिल्म सिद्धांत से मिलती है, अतः आज भी संरचनावाद के उपयोग से फिल्में बनाई जाती है। आज संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद और डिकन्शट्रक्शन (Deconstruction) जैसे दृष्टिकोणों की तुलना में कम लोकप्रिय है। इसके कई कारण हैं। अक्सर संरचनावाद की आलोचना अनैतिहासिक होने तथा व्यक्तिगत क्षमता से कार्य करने की अपेक्षा नियतात्मक संरचनात्मक बलों का पक्ष लेने के लिए की गई है। खैर जो भी हो संरचनावादी सिद्धांतों के कारण सिनेमा में एक प्रकार की सुसूत्रता आ चुकी है। सिनेमा बनाते वक्त जो मुश्किलें सामने थी उनको सुलझाया जा चुका है।

## 9. नवयथार्थवादी फिल्म सिद्धांत

यथार्थवाद और उससे उपजा नवयथार्थवादी विचार दार्शनिक और साहित्यिक दुनिया की उपज है। वास्तविक दुनिया का जैसे के वैसे चित्रण करना साहित्य में यथार्थवाद बना और वहीं दृश्यों का जैसे के वैसे चित्रण करना फिल्मों का यथार्थवाद कहा जाने लगा। इसी यथार्थवाद के साथ सिनेमा के निर्माता और कलाकारों ने कई नए प्रयोग किए तो वह नवयथार्थवाद (New Realistic) कहा जाने लगा। "यथार्थवाद जो बात या पदार्थ वस्तुतः जिस रूप में हो उसे उसी रूप में मानना या ग्रहण करना है, यह दार्शनिक विश्वास या सिद्धांत की भौतिक जगत् की स्वतंत्र सत्ता या अस्तित्व है और हमें सारा ज्ञान भौतिक तत्त्वों से होता है। यह सिद्धांत आदर्शों के सिद्धांतों का उलटा या विरोधी है। साहित्य में यह सिद्धांत है कि संसार में हमें जो चीजें जिन रूपों में दिखाई देती या मिलती हैं उनका ग्रहण तथा वर्णन हमें ठीक उन्हीं रूपों में करना चाहिए है। यथार्थवादी उसे कहा जाता है जो यथार्थ या सत्य कहनेवाला सत्यवादी हो। साहित्य में यथार्थवाद का सिद्धांत माननेवला यथार्थवादी (Realistic) है।" *(मानक विशाल हिंदी शब्दकोश, पृ. 570)* विश्व सिनेमा में साहित्यिक यथार्थवाद के साथ यथार्थवादी फिल्में बन रही थी और फिल्मों के निर्माणकर्ता और दर्शक इससे काफी खुश भी थे। फिल्मों में इस यथार्थ को और यथार्थवादी बनाने के लिए नवयथार्थवाद का प्रवेश या स्वीकृति सबसे प्रथम इटली के सिनेमा में आई। 1950 और 1960 के बीच इटली के सिनेमाई दुनिया में प्रवेशित यह सिद्धांत विश्व सिनेमा को काफी प्रभावित करता है और उसके देखा देखी सारी दुनिया में इसी प्रकार के प्रयोगों से फिल्में बनना शुरू होता है। "नवयथार्थवाद की कई खूबियां थीं। सबसे बड़ी खूबी गैर पेशेवर अभिनेताओं का इस्तेमाल था। अगर किसी फिल्म में पेशेवर अभिनेता लिए भी जाते थे तो उन्हें अधिकतर आम लोगों के बीच भीड़ और वास्तविक लोकेशन के बीच में शूट किया जाता था। आमतौर पर जो काम अन्य फिल्मों में एक्स्ट्रा से लिया जाता था, वह काम इस नियोरियलिस्टिक सिनेमा में आम लोगों की भीड़ से

लिया जाने लगा। दरअसल बहुत से तरीके फिल्म का बजट कम होने के कारण खर्च बचाने के लिए इस्तेमाल में लाए जाते थे, मगर देखते-देखते यह यथार्थ को ज्यादा प्रामाणिक और प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करने का तरीका बन गया।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 37)* आर्थिक तंगी के चलते फिल्म निर्माताओं की अपेक्षाएं भी कम बजट में फिल्में बनाने की थी, अतः नवयथार्थवाद उनके लिए मानो सोने पे सुहागा साबित हुआ और विश्व सिनेमा में यह अतिशय प्रिय भी हुआ। इटली में बनी नवयथार्थवादी फिल्म 'बाईसिकिल थीव्स' ने न केवल भारत को बल्कि विश्व सिनेमा को प्रभावित किया और उससे प्रेरित होकर कई फिल्में बनाई जाने लगी। इस आंदोलन की फिल्मों के आरंभिक उदाहरणों में चेतन आनंद की 'नीचा नगर' (1946), ऋत्विक घटक की 'नागरिक' (1952), बिमल राय की 'दो बीघा जमीन' (1953) शामिल हैं जिन्होंने भारतीय नवयर्थाथवाद व नई लहर की नींव रखी। सत्यजित राय की अप्पू ट्रायोलॉजी (1955-1959) ने सभी अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सवों में पुरस्कार पाए और समानांतर सिनेमा के आंदोलन को भारतीय सिनेमा में स्थापित कर दिया। चेतना आनंद की फिल्म 'नीचा नगर' ने पहले केन्स फिल्मोत्सव में पुरस्कार जीता और इसके बाद 1950 व 1960 के दशक में ऐसी अनेक फिल्में सामने आई जिन्होंने अनेक पुरस्कार अर्जित किए। सत्यजित राय को अप्पू ट्रायोलॉजी के दूसरे भाग 'अपराजितो' (1956) के लिए वेनिस फिल्मोत्सव में गोल्डन लॉयन पुरस्कार प्रदान किया गया। बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में वे श्रेष्ठ निर्देशक के रूप में गोल्डन बियर व दो सिल्वर बियर पुरस्कारों से सम्मानित किए गए। इस दौर के अनेक भारतीय प्रांतों में बनी फिल्में आलोचकों और निर्देशकों द्वारा सराही जानेवाली फिल्मों की गिनती में आती हैं।

## 10. अभिव्यंजनावादी फिल्म सिद्धांत

इटली, जर्मनी और आस्ट्रिया के साहित्य और फिल्मी दुनिया में अभिव्यंजनावादी विचारों का उद्भव और विकास हुआ। अभिव्यंजनावादी विचारों के प्रचारक खुद को इतालवी दार्शनिक बेनदेतो क्रोचे के अनुयायी कहना पसंद करते हैं। "अभिव्यंजनावादियों का कहना है कि कवि या कलाकार अपने अंतर की भावना को बाहर प्रकाशित करता है, बाह्य वस्तु को नहीं। यह भावना उसकी अपनी निज की वस्तु है। अपनी इस भावना को प्रकाशित करने में ही उसकी सार्थकता है। अभिव्यंजनावादियों के मत से कलाकार का काम यथार्थ का प्रतिनिधिमूलक चित्रण करना नहीं है। वह या तो अपने अंतर की भावना के अनुरूप यथार्थ को चित्रित करता है या उस यथार्थ को स्पर्श ही नहीं करता। वह केवल अपने मन की एक अवस्था को अभिव्यंजित करता है और इस अभिव्यक्ति का माध्यम शब्द, रंग आदि से निर्मित ढांचा होता है। इस प्रकार कलाकार जिस रूप की सृष्टि करता है, वह उसके मन की अवस्था से मिलती-जुलती है। लेकिन यह कैसे संपन्न होती

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

है इसकी व्याख्या नहीं हो सकती। क्रोचे इस बात को मानता है कि कला अंतर की भावना या सहजज्ञान (Intuition) है और किसी प्रकार की बाह्य वस्तु से इसका संबंध नहीं जोड़ा जा सकता, क्योंकि बाह्य वस्तु में वास्तविकता (Reality) नहीं है।" *(हिंदी साहित्य कोश, पृ. 39)*

अभिव्यंजनावाद के प्रधानत: तीन प्रकार हैं -

1. विरूपित, यद्यपि सर्वथा अमूर्त नहीं
2. अमूर्त
3. नव वस्तुवादी।

इनमें से पहले वर्ग के कलाकारों में प्रधान हैं किर्चनर नोल्र्ड, पेख्स्टीन और मूलर; दूसरे में मार्क, कांडिसकी, क्ली, जालेंस्की और तीसरे में ओटो, डिक्स, जार्ज ग्रोत्स आदि। जर्मनी से बाहर के अभिव्यंजनावादियों में प्रधान रूआल, सूतें और एदवार मंक हैं। अभिव्यंजनावाद ललित कलाओं के माध्यम से साहित्य में आया। यही आंदोलन इटली में भविष्यद्वाद (फ्यूच्यूरिस्ट) और क्रांतिपूर्व रूप में 'क्यूबोफ्यूचरिज्म' कहलाया इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसीसी चित्रकार हेव ने 1901 में किया, इसे आस्ट्रिया के लेखक हेरमान बाहर ने 1914 में साहित्यालोचन में प्रयुक्त किया। इसका मूल उद्देश्य था यांत्रिकता के विरुद्ध विद्रोह। यथार्थवाद की परिणति प्रकृतिवाद और नव्यरोमांसवाद तथा बिंबवाद आदि से ऊबकर उसकी प्रतिक्रिया में अभिव्यंजनावाद चला। "जर्मन अभिव्यंजनावाद को समझे बगैर आधुनिक विश्व सिनेमा को नहीं समझा जा सकता है। फ्रांस के अतियथार्थवादियों की तरह जर्मन के युवा फिल्मकारों को यह सवाल परेशान करने लगा था कि क्या सिनेमा सिर्फ यथार्थ की पुनर्प्रस्तुतिकरण का माध्यम है। उनका तर्क था कि अगर सिनेमा का काम सिर्फ इतना ही है तो स्तांधाल, बादलेयर, बालजाक, लाबेयर और जोला जैसे लेखक पहले ही यह काम बहुत बेहतर ढंग से कर चुके हैं। तो क्या सिनेमा किसी भी तरीके से अभिव्यक्ति की कला का अलग चरण नहीं है? इस सवाल का जवाब मिला अभिव्यंजनावादी फिल्मों में। यह कहानी कहने की एक ऐसी अलग विधा के रूप में विकसित हुआ जिसने सिनेमा की कलात्मक संभावानओं के असीम द्वार खोल दिए।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 47)* अभिव्यंजनावादी सिद्धांत ने फिल्मों को उनके कथानक के अनुरूप एक नया मुड़ देने का भी काम किया है।

## सारांश

मनुष्य जीवन अन्य सजीवों की अपेक्षा अलग है। आज वह जिन स्थितियों में है वहां वह कल रहेगा नहीं। इसके आरंभ, विकास और भविष्य में जमीन-आसमान का अंतर है। उसने बुद्धि के चलते संस्कार और सभ्यता के कई मापदंड़ स्थापित किए हैं। उसका जीवन जीना मानो एक

प्रकार की कला है। अपने जीवन के प्रत्येक आयाम और कृति में उसने कई आदर्श स्थापित किए हैं। वहीं आदर्श आगे चलकर सिद्धांत का भी स्वरूप ले चुके हैं। नवयुग का अद्भुत चमत्कार सिनेमा मनुष्यों के आदर्श और सिद्धांतों से कैसे अछूता रहेगा। सिनेमा एक सामाजिक कला है, अतः उसका समाज की रुचि और मांग के हिसाब से बनना भी जरूरी है। विश्व में सिनेमा की दुनिया बहुत बड़ी है। इसमें काम करनेवाले कलाकार और इसके निर्माण में जुटनेवाले निर्माणकर्ताओं की संख्या भी बहुत अधिक है। प्रत्येक व्यक्ति के विचार और जीने के तरीके भिन्न होते हैं। अर्थात् यहीं भिन्नता सिनेमा में भी कम अधिक मात्रा में देखी जाती है। अपने विचार, सोच, आचार, तर्क, विषय और सिद्धांत के तहत वह सिनेमा बनाने की कोशिश करता है। उसके विचारों और सिद्धांतों को अपने विचार और सिद्धांत माननेवाले लोगों की संख्या भी अधिक होती है। दर्शक अपने विचार, रुचि और सिद्धांतों के अनुकूल कोई फिल्म बनी है तो उसे बड़े प्यार से स्वीकारते भी हैं। कुलमिलाकर निष्कर्ष यह निकलता है कि सिनेमा के निर्माणकर्ता दर्शकों के लिए आवश्यक मनोरंजन के साथ कई सिद्धांतों के तहत फिल्में बनाने का कार्य करते हैं। यह सिद्धांत तकनीकी पक्ष और विषय पक्ष के साथ जुड़ जाते हैं। फिल्म निर्माण के तकनीकी पक्षवाले सिद्धांत फिल्म के बाहरी पक्ष को मजबूत करते हैं और विषय पक्ष को ताकतवर बनाने का कार्य भी करते हैं। विषय पक्षवाले सिद्धांत फिल्मों की बुनियाद होते हैं और अंदरूनी पक्ष को ताकत प्रदान करते हैं। फिल्म की सफलता असफलता इस पर निर्भर होती है। फिल्मों के उद्देश्यों के साथ वह सीधे जुड़ते हैं और दर्शकों पर गहरा प्रभाव भी छोड़ते हैं।

ऊपर उपकरण सिद्धांत, लेखक सिद्धांत, नारीवादी सिद्धांत, औपचारिक सिद्धांत, मार्क्सवादी सिद्धांत, दार्शनिक सिद्धांत, मनोविष्लेषणात्मक सिद्धांत, सरंचनावादी सिद्धांत, नवयथार्थवादी सिद्धांत और अभिव्यंजनावादी सिद्धांत का विश्लेषण किया है इसका अर्थ यह नहीं है कि सिनेमा निर्माण में केवल यहीं सिद्धांत काम करते हैं। यह प्रमुख सिद्धांत है परंतु इसके अलावा ढेरों सिद्धांतों का नामोल्लेख हो सकता है जो सिनेमा निर्माण में योगदान देते हैं तथा सिनेमा पर प्रभाव डालते हैं। यहां पर हमारा उद्देश्य इस बहाने सिनेमा पर प्रभाव डाल रहे चुनिंदा फिल्म सिद्धांतों का परिचय करना रहा है। दुनिया को खूबसूरत बनाने के लिए, बुराई खत्म कर अच्छाई को स्थापित करने के लिए कई लोग, विचारवंत, दार्शनिक अपना योगदान दे चुके हैं, दे रहे हैं। अर्थात् इन दार्शनिकों की वैचारिक स्थापनाएं सिद्धांत का स्वरूप धारण करती है और जैसे पाठक, अनुयायी इसे अपनाते हैं वैसे ही फिल्म निर्माता और दर्शक भी इसे स्वीकारते हैं, पसंद करते हैं। फिल्मों के लिए एक कहानी की आवश्यकता होती है और कहानी लिखनेवाला कोई लेखक होता है। लेखक एक स्वतंत्र व्यक्ति है और उसके जीवन जीने के आदर्श तय होते हैं; उन आदर्शों के लिए वह अपना जीवन समर्पित करता है। अर्थात् साहित्य, रचनाओं और कहानियों में लेखक अपने आदर्श और सिद्धांतों को स्थापित

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

करता है। लेखकों द्वारा लिखी यहीं कहानियां जब फिल्म निर्माता चुनते हैं तो फिल्मी दुनिया के अनुकूल थोड़े परिवर्तन के साथ उन्हीं सिद्धांतों को लेकर आती है। इसका अर्थ यह होता है कि फिल्म निर्माता भी उन सिद्धांतों को फिल्म में उतारना चाहता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि फिल्मों का मूल कहानीकार, पटकथा लेखक और निर्माता विषयपक्षीय सिद्धांत को किस रूप में परदे पर उतारना है तय करते हैं।

## शब्दार्थ

**सिद्धांत (Theories)** - विचार अथवा तर्क द्वारा निश्चित किया हुआ मत। असूल (Principle)। विद्या कला आदि के संबंध में कोई ऐसी मूल बात या मत जो किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादित या स्थापित हो और जिसे बहुत लोग ठीक मानते हो। ऋषियों, दार्शनिक और विचारवंतों के उपदेश। सार की बात या तत्त्वार्थ।

**नारीवाद (Feminist)** - राजनैतिक आंदोलन का एक सामाजिक सिद्धांत है जो स्त्रियों के अनुभवों से जनित है। हालांकि मूल रूप से यह सामाजिक संबंधों से अनुप्रेरित है लेकिन कई स्त्रीवादी विद्वान का मुख्य जोर लैंगिक असमानता और औरतों के अधिकार इत्यादि पर ज्यादा बल देते हैं। नारीवादी सिद्धांतों का उद्देश्य लैंगिक असमानता की प्रकृति एवं कारणों को समझना तथा इसके फलस्वरूप पैदा होनेवाले लैंगिक भेदभाव की राजनीति और शक्ति संतुलन के सिद्धांतों पर इसके असर की व्याख्या करना है। स्त्री विमर्श संबंधी राजनैतिक प्रचारों का जोर प्रजनन संबंधी अधिकार, घरेलू हिंसा, मातृत्व अवकाश, समान वेतन संबंधी अधिकार, यौन उत्पीड़न, भेदभाव एवं यौन हिंसा पर रहता है। स्त्रीवादी विमर्श संबंधी आदर्श का मूल कथ्य यही रहता है कि कानूनी अधिकारों का आधार लिंग न बने। आधुनिक स्त्रीवादी विमर्श की मुख्य आलोचना हमेशा से यही रही है कि इसके सिद्धांत एवं दर्शन मुख्य रूप से पश्चिमी मूल्यों एवं दर्शन पर आधारित रहे हैं।

**फॉर्मलिस्म (Formalism)** - नियम निष्ठता, परंपरागत या औपचारिक। यह एक साहित्यक आलोचना और साहित्यिक वाद है जो किसी भी लिखित मूल पाठ के उद्देश्य को समझने की कोशिश करता है। यह पाठ को बाहरी प्रभाव से अलग देखता है। नियम निष्ठता पाठ को संस्कृति और सामाजिक भेद-भाव और प्रभाव से अलग देखती है। और साहित्यक साधन, शैली, प्रवचन, और प्रपत्र पर ज़्यादा केंद्रित है। साहित्यक आलोचना में, नियम निष्ठता उन चीज़ो पर केंद्रित है जो पाठ से समालोचनात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषण या व्याख्या करती हो। सिनेमा में परंपरागत तौर पर बननेवाला सिनेमा Formalist Film Theory के तहत बना सिनेमा माना जाता है।

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

**मार्क्सवाद** - सामाजिक राजनीतिक दर्शन में मार्क्सवाद (Marxism) उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व द्वारा वर्गविहीन समाज की स्थापना के संकल्प की साम्यवादी विचारधारा है। मूलतः मार्क्सवाद उन आर्थिक राजनीतिक और आर्थिक सिद्धांतों का समुच्चय है जिन्हें उन्नीसवीं-बीसवीं सदी में कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स और व्लादिमीर लेनिन तथा साथी विचारकों ने समाजवाद के वैज्ञानिक आधार की पुष्टि के लिए प्रस्तुत किया है।

**संरचनावाद (Structuralism)** - मानव विज्ञान की एक ऐसी पद्धति है जो संकेत विज्ञान और सहजता से परस्पर संबद्ध भागों की एक पद्धति के अनुसार तथ्यों का विश्लेषण करने का प्रयास करती है। स्वीडन के प्रसिद्ध भाषाविद फर्दिनान्द द सस्यूर (Ferdinand de Saussure) इसके प्रवर्तक माने जाते हैं, जिन्हें हिंदी में सस्यूर नाम से जाना जाता है। तर्क के संरचनावादी तरीके को विभिन्न क्षेत्रों जैसे, नृविज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, साहित्यिक आलोचना और यहां तक कि वास्तुकला में भी लागू किया गया है। इसने एक विधि के रूप में नहीं बल्कि एक बौद्धिक आंदोलन के रूप में संरचनावाद में प्रवेश किया, जो 1960 के दशक में फ्रांस में अस्तित्ववाद की जगह लेने आया था। Structuralist Film Theory पर इन्हीं विचारों का प्रभाव है और इसी के तहत फिल्में बनाने की कोशिश होती है।

**अभिव्यंजनावाद** - इटली, जर्मनी और आस्ट्रिया से प्रादुर्भूत प्रधानत: मध्य यूरोप की एक चित्र-मूर्ति-शैली है जिसका प्रयोग साहित्य, नृत्य और सिनेमा के क्षेत्र में भी हुआ है। सिद्धांत रूप में इसका साहित्यिक प्रतिपादन इटली के विचारक बेनेदितो क्रोचे ने किया। क्रोचे के अनुसार 'अंतःप्रज्ञा के क्षणों में आत्मा की सहजानुभूति ही अभिव्यंजना है।' अभिव्यंजनावाद की मूल संकल्पना है कि कला का अनुभव बिजली की कौंध की तरह होता है, अतः यह शैली वर्णनात्मक अथवा चाक्षुष न होकर विश्लेषणात्मक और आभ्यंतरिक होती है। उस भाववादी शैली के विपरीत जिसमें कलाकार की अभिरुचि प्रकाश और गति में ही केंद्रित होती है। यहीं तक सीमित न होकर अभिव्यंजनावादी प्रकाश का प्रयोग बाह्य रूप को भेद भीतर का तथ्य प्राप्त कर लेने, आंतरिक सत्य से साक्षात्कार करने और गति के भावप्रक्षेपण आत्मान्वेषण के लिए करता है। वह रूप, रंगादि के विरूपण द्वारा वस्तुओं का स्वाभाविक आकार नष्ट कर अनेक आंतरिक आवेगात्मक सत्य को ढूंढ़ता है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पश्चिम और सिनेमा - दिनेश श्रीनेत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.
2. फिल्म का सौंदर्यशास्त्र और भारतीय सिनेमा, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, 2010.
3. मानक विशाल हिंदी शब्दकोश (हिंदी-हिंदी) - (सं.) डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, परिवर्द्धित संस्करण, 2001.

4. सिनेमा : कल, आज, कल - विनोद भारद्वाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.
5. हिंदी साहित्य कोश भाग 1, पारिभाषिक शब्दावली - (प्र. सं.) धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमंड़ल लि. वाराणसी, तृतीय संस्करण, 1985.
6. हिंदी सिनेमा दुनिया से अलग दुनिया - (सं) गीताश्री, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, 2014.

■■■